रामकली ने हार नहीं मानी

वीणा शिवपुरी

इस देश की लाखों बच्चियों की तरह रामकली को भी बचपन में ही ब्याह दिया गया था। सात साल की कच्ची उम्र में इसे ब्याह के मायने भी नहीं मालूम थे। रामकली का बाप मर चुका था। उसके मामा ने उसे बछिया की तरह मंगली के खूंटे से बांध दिया।

मंगली निकला कसाई। आखिर उसने रामकली के मामा को पूरे आठ हजार रुपए दिए थे। यह शादी तो नाम की थी। मंगली ने एक गुलाम खरीदी थी। भला सात साल की बच्ची को क्या मालूम किसने उसे बेचा और किसने उसे खरीदा।

बच्ची हुई समरथ

रामकली जवान हुई लेकिन उसका मन मंगली से कभी न मिला। मिलता भी कैसे, मंगली शराबी और बदमिज़ाज था। कामधाम कुछ न करता, बस घर बैठा रामकली की मजदूरी पर खाता।

कौन औरत भला ऐसे मर्द के साथ रहना चाहेगी। न प्यार, न देखभाल और न ही कामधंधा। ऐसी शादी में रामकली का दम घुटता था, लेकिन क्या करती। कहां जाती, किससे अपना दुखड़ा सुनाती। मर्दों की इस दुनिया में सब यही कहते, वह तेरा पति है।

समय बीतता गया। तीन बच्चे भी हो गए।

दिमाग खुला

उम्र के साथ रामकली की समझ बढ़ी। उसने ऐसी शादी मानने से इनकार कर दिया।

रामकली कहती—"मेरे मामा ने मुझे बेच दिया। यह शादी मेरी मर्ज़ी से नहीं हुई। उस पर मुझे ही मजदूरी करके अपना, बच्चों का और मंगली का पेट भरना पड़ता है। क्यों मानूं ऐसी शादी को?"

रामकली को यह नहीं मालूम था कि देश का कानून भी उसे ऐसी शादी न मानने का हक़ देता है। वह तो अपनी मन और बुद्धि की बात मान रही थी। उत्तर प्रदेश के उस पिछड़े इलाके में न कोई कानून की बात करता था, न अदालत जाने की सोचता था। उनकी अदालत तो पंचायत ही थी।

पंचायत की दुहाई

रामकली ने पंचों को अपनी कहानी सुनाई। जरा तो सोचो, जरा तो दया करो। मुझे इस शादी से मुक्ति दे दो। पंच कौन थे? वे भी मंगली जैसे मर्द। अगर औरतें ऐसे बोलने लगेंगी तो पतियों की तानाशाही कैसे चलेगी।

पंचों ने कहा—"रामकली तुझे मंगली के साथ ही रहना पड़ेगा।"

मंगली जीत गया। पंचायतघर से अपनी झोंपड़ी तक रामकली को जबरन घसीटता ले गया। एक बार फिर रामकली उसी नरक में रहने लगी। लेकिन इस अन्याय को उसने माना नहीं। उसने तय कर लिया था वह हार नहीं मानेगी।

कुछ साल और बीते। फिर एक बार उसने पंचायत को गुहार लगाई। इंसाफ की मांग की। फिर एक बार पंचायत ने उसे औरत का धर्म समझाया।

औरत का धर्म क्या

हमारा समाज किसे औरत का धर्म कहता है? चुपचाप, बिना सींग-पूंछ हिलाए हर अत्याचार को सहते जाना। ऐसा तो जानवर भी नहीं करता। उसे कोई मारेगा तो वह भी हमला करता है। बस, औरत के पास कोई हक नहीं है। क्यों? क्या वह इंसान नहीं? उसके और मर्द के हकों में इतना अंतर क्यों। क्या दोनों के हाथ-पैर, दिल-दिमाग बराबर नहीं? क्या दोनों को बराबर चोट नहीं लगती, दुख-तकलीफ नहीं होती? औरत का धर्म वही है जो इंसान का है और औरत का हक भी वही है जो इंसान का है।

अठारह साल बीत गए लेकिन रामकली अपनी मांग पर डटी रही। उसने फिर पंचायत का दरवाज़ा खटखटाया। "मेरा मंगली से तलाक करा दो वरना मैं अपनी जान दे दूंगी। बस, बहुत सह लिया। अब मैं मर-मर के नहीं जीऊंगी।"

समाज ने उसे उसके बच्चों का वास्ता दिया। मंगली ने कहा वह बेटे रख लेगा। उसे कुछ भी सामान नहीं देगा।

"न दे। मैं कमा लूंगी। बेटे भी रख ले, मैं छाती पर पत्थर रख लूंगी। अब कोई मुझे पति, घर, बच्चों के नाम पर रोक नहीं सकता। जब मेरी जिंदगी में कोई सुख नहीं तो पति, बच्चे, घर किस काम के।"

सबने रामकली की मजबूत इच्छाशक्ति के सामने हार मान ली। पंच भी समझ गए कि रामकली को और दबाना संभव नहीं। उन्होंने रामकली को मंगली से आज़ाद कर दिया। पच्चीस साल की रामकली अब अपनी जिन्दगी फिर से शुरू करना चाहती है। अभी तो बहुत कुछ है देखने के लिए, करने के लिए। अब तक तो सिवाए दुख और आंसुओं के उसे मिला ही क्या।

हर औरत का हक

चैन और सुख का जीवन हर औरत का हक है। अगर रामकली की कानून तक पहुंच होती तो शायद उसे अठारह साल तक दुख न उठाने पड़ते। पिछड़े इलाके की आदिवासी औरत होते हुए भी उसने अपने हकों के लिए संघर्ष किया, आवाज़ उठाई और अंत में विजय पाई। □

तुम दीप शिखा बन
उजियाला फैलाओ
तुम शक्तिधाम, सृजनशीला
बुद्धि आलोक फैलाओ
विद्याहीन रहे न कोई नारी
ऐसी कोई जुगत बनाओ
जो रखे अपना ध्यान प्रभु उसके सहाए
ऐसी सोच बढ़ाती जाओ।